आभार

इस शोध कार्य के दौरान मुझे जिनका सहयोग मिला उनका आभार मानना मेरा प्रथम कर्तव्य है। सर्वप्रथम महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के कलासंकाय, हिन्दी-विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. शैलजा भारद्वाज जी का आभार प्रकट करना चाहती हूँ जिनका सहयोग मुझे बराबर मिलता रहा तथा शोध से सम्बन्धित विषयों के अलावा मुझे विभाग में हो रही इतर साहित्यिक गतिविधियों से भी परिचित कराती रहीं, जिनका लाभ मुझे भविष्य में भी मिलता रहेगा।

मेरी शोध-निर्देशिका डॉ. लता सुमन्त जी का जितना भी आभार मानू वह कम है। अगर उन्होंने मुझे शोध छात्रा के रूप में चुना न होता तो शायद मैं अपने लक्ष्य तक न पहुँच पाती। उन्होंने न केवल एक गुरू की भाँति मेरा मार्गदर्शन किया बल्कि एक माँ की भाँति सदा मेरी गल्तियों को भी सुधारा है। इसके अलावा डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय सर का ऋण में कभी भी नही चुका पाऊँगी जिन्होंने इस शोधकार्य के दौरान शोध से संबंधित प्रत्येक परेशानियों में मेरा सहयोग दिया और शोध को पूर्ण करने मे मदद की।

इसके उपरान्त मैं हिन्दी विभाग के अन्य प्राध्यापकों जैसे- डॉ. ओमप्रकाश यादव, डॉ. दक्षा मिस्त्री, डॉ. कल्पना गवली, डॉ. निनामा, डॉ. एन. एस. परमार डॉ. शन्नो पाण्डेय, डॉ. दीपेश जाड़ेजा, डॉ. मनीषा ठक्कर, डॉ. अनीता शुक्ला आदि का भी आभार प्रकट करना चाहती हूँ जिनका सहयोग मुझे समय-समय पर मिलता रहा। साथ ही हंसा मेहता लायब्रेरी के कर्मचारियों का भी आभार मानती हूँ जिन्होंने मुझे पुस्तक चयन में मेरी काफी मदद की।

जिनके सहयोग से मेरा कार्य संपन्न हुआ, ऐसे मेरे पिता श्री विजयकुमार रसीकलाल शाह और माता श्रीमती जयाबेन विजयकुमार शाह का मैं दिल से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे शोधकार्य के दौरान घर की जिम्मेदारियों से मुक्त रखा और मैं यह भगीरथ कार्य करने में सफल हुई। मेरे माता-पिता का यह विश्वास था कि मैं पी-एच. डी. का कार्य सम्पन्न कर लूंगी और आज मैं उसे पूर्ण करते हुए अत्यन्त गौरव महसूस कर रही हूँ।

इसके अलावा इस शोध के दौरान मेरे जिन मित्रों का सहयोग समय-समय पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिलता रहा उनका भी मैं आभारी हूँ। -- अस्तु

अमीषा वी. शाह